Resource: Open Hindi Contemporary Version

License Information

Open Hindi Contemporary Version (Hindi) is based on: Hindi Contemporary Version Bible, Biblica, Inc, 2019, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

Open Hindi Contemporary Version

Ezra 1:1

1 फारस के राजा कोरेश के शासन के पहले साल में येरेमियाह
द्वारा कही गई याहवेह की भविष्यवाणी पूरी करने के उद्देश्य
से याहवेह ने फारस के राजा की आत्मा को उभारा.
फलस्वरूप उसने सभी राज्य में यह लिखित घोषणा करवा
दी:

2 "फारस के राजा कोरेश का आदेश यह है: " 'याहवेह ने, जो
स्वर्ग के परमेश्वर हैं, मुझे सारी पृथ्वी के राज्यों पर अधिकार
दिया है, उन्होंने ही मुझे येरूशलेम नगर में, जो यहूदिया प्रदेश
में है, उनके लिए एक भवन बनाने के लिए चुना है.

3 आप लोगों में से जो कोई याहवेह की प्रजा में से है, आपके
परमेश्वर आपके साथ रहे! आप यहूदिया प्रदेश के येरूशलेम
को जाएं तथा याहवेह इस्राएल के परमेश्वर के लिए इस भवन
को दोबारा बनाएं. यह वही परमेश्वर हैं, जो येरूशलेम में हैं.

4 किसी भी स्थान पर, परमेश्वर के किसी भी जन को, यदि वह
अब तक जीवित है, उस स्थान के नागरिक चांदी, सोना, अन्य
वस्तुएं, पशु एवं स्वेच्छा से भेंटे देकर येरूशलेम में परमेश्वर के
भवन को बनाने के लिए उसकी सहायता करें.' "

5 तब यहूदाह एवं बिन्यामिन के कुलों के प्रधान, पुरोहित तथा
लेवी तैयार हो गए, हर एक वह, जिस किसी के हृदय को
परमेश्वर ने उकसाया कि येरूशलेम में याहवेह के भवन को
दोबारा से बनाएं.

6 उनके पड़ोसियों ने उन्हें चांदी, सोना, अन्य सामग्री; कीमती
वस्तुएं, पशु देकर प्रोत्साहित किया तथा इनके अलावा उन्होंने
इन्हें अपनी इच्छा से भेंटे भी दे दी.

7 साथ ही राजा कोरेश याहवेह के भवन की वस्तुएं भी निकाल
लाया, जो नबूकदनेज़्ज़र येरूशलेम से ले आया था और अपने
देवताओं के भवन में रख दिया था.

8 फारस के राजा कोरेश के खजांची मिथरेदाथ के द्वारा इन
बर्तनों को मंगवाया तथा यहूदिया के शासक शेशबाज़्ज़र के
सामने इनकी गिनती कर दी.

9 इन बर्तनों की संख्या इस प्रकार थी: सोने की चिलमचियां 30
चांदी की चिलमचियां 1,000 दूसरे कटोरे 29

10 सोने की कटोरियां 30 समान चांदी की कटोरियां 410
अलग-अलग बर्तन 1,000

11 सोने और चांदी के कुल बर्तनों की संख्या 5,400 थी.
शेशबाज़्ज़र इन सभी को उन बंदियों के साथ बाबेल से
येरूशलेम ले आया.

Ezra 2:1

1 इस प्रदेश के लोग, जो बाबेल के राजा नबूकदनेज़्ज़र द्वारा
बंधुआई में ले जाए गए थे और जो बंधुआई से यहूदिया और
येरूशलेम, अपने-अपने नगर को लौट आए थे, वे इस प्रकार
है

2 ये वे हैं, जो ज़ेरुब्बाबेल के साथ आए थे: येशुआ, नेहेमियाह,
सेराइयाह, रीलाइयाह, मोरदकय, बिलषान, मिसपार,
बिगवाई, रेहुम और बाअनाह. इस्राएली प्रजा के पुरुषों की
संख्या अपने-अपने कुलों के अनुसार निम्न लिखित है:

3 पारोश

4 शेपाथियाह 372

5 आराह 775

6 पाहाथ-मोआब के वंशजों में से येशुआ एवं योआब के वंशज
2,812

7 एलाम 1,254

8 ज़त्तू 945

9 ज़क्काई 760

10 बानी 642

11 बेबाइ 623

12 अजगाद 1,222

13 अदोनिकम 666

14 बिगवाई 2,056

15 आदिन 454

16 हिज़किय्याह की ओर से अतेर के वंशज 98

17 बेज़ाइ के वंशज 323

18 यारोह के वंशज 112

19 हाषूम 223

20 गिब्बर 95

21 बेथलेहेम के निवासी 123

22 नेतोपाह के निवासी 56

23 अनाथोथ के निवासी 128

24 अज़मावेथ के निवासी 42

25 किरयथ-यआरीम के कफीराह तथा बएरोथ के निवासी
743

26 रामाह तथा गेबा के निवासी 621

27 मिकमाश के निवासी 122

28 बेथेल तथा अय के निवासी 223

29 नेबो के निवासी 52

30 मकबिष के निवासी 156

31 उस अन्य एलाम के वंशज 1,254

32 हारिम के वंशज 320

33 लोद, हदिद तथा ओनो 725

34 येरीख़ो के निवासी 345

35 सेनाआह 3,630

36 पुरोहित: येशुआ के परिवार से येदाइयाह के वंशज 973

37 इम्मर 1,052

38 पशहूर 1,247

39 हारिम 1,017

40 लेवी: होदवियाह के वंशजों में से कदमिएल तथा येशुआ, होदवियाह के वंशज 74

41 गायक: आसफ के वंशज 128

42 द्वारपाल: शल्लूम, अतेर, तालमोन, अक्कूब, हतिता और शेबाई 139

43 मंदिर सेवक इनके वंशज थे: ज़ीहा, हासुफ़ा, तब्बओथ,

44 केरोस, सियाहा, पदोन,

45 लेबानाह, हागाबाह, अक्कूब,

46 हागाब, शामलाई, हनान,

47 गिद्देल, गाहर, रेआइयाह,

48 रेज़िन, नेकोदा, गज्ज़ाम,

49 उज्जा, पासेह, बेसाई,

50 आसनाह, मिऊनी, नेफिसिम,

51 बकबुक, हकूफा, हरहूर,

52 बाज़लुथ, मेहिदा, हरषा,

53 बारकोस, सीसरा, तेमाह,

54 नेज़ीयाह, हातिफा.

55 शलोमोन के सेवकों के वंशज: हसोफेरेथ, पेरुदा, सोताई,

56 याला, दारकोन, गिद्देल,

57 शेपाथियाह, हत्तील, पोचेरेथ-हज्ज़ेबाइम, आमि.

58 मंदिर के सेवक और शलोमोन के सेवकों की कुल गिनती: 392

59 ये वे हैं, जो तेल-मेलाह, तेल-हरषा, करूब, अद्दान तथा इम्मर से आए, तथा इनके पास अपनी वंशावली के सबूत नहीं थे, कि वे इस्राएल के वंशज थे भी या नहीं:

60 देलाइयाह के वंशज, तोबियाह के वंशज तथा नेकोदा के वंशज 652

61 पुरोहितों में: होबाइयाह के वंशज, हक्कोज़ के वंशज तथा बारज़िल्लाई, जिसने गिलआदवासी बारज़िल्लाई की पुत्रियों में से एक के साथ विवाह किया था और उसने उन्हीं का नाम रख लिया.

62 इन्होंने अपने पुरखों के पंजीकरण की खोज की, किंतु इन्हें सच्चाई मालूम न हो सकी; तब इन्हें सांस्कृतिक रूप से अपवित्र माना गया तथा इन्हें पुरोहित जवाबदारी से दूर रखा गया.

63 अधिपति ने उन्हें आदेश दिया कि वे उस समय तक अति पवित्र भोजन न खाएं, जब तक वहां कोई ऐसा पुरोहित न हो, जो उरीम तथा थुम्मिन से सलाह न ले लें.

64 सारी सभा की पूरी संख्या हुई 42,360.

65 इनके अलावा 7,337 दास-दासियां तथा 200 गायक-गायिकाएं भी थी.

66 उनके 736 घोड़े, 245 खच्चर,

67 435 ऊंट तथा 6,720 गधे थे.

68 कुलों के कुछ प्रधान जब येरूशलेम में याहवेह के भवन में
पहुंचे, उन्होंने अपनी इच्छा के अनुसार परमेश्वर के भवन को
उसी नींव पर दोबारा बनाने के लिए दान दिया.

69 उन्होंने अपनी-अपनी क्षमता के अनुसार इस काम के लिए
61,000 सोने के सिक्के, 5,000 चांदी के सिक्के तथा 100
पुरोहित वस्त्र खजाने में जमा करा दिए.

70 इस समय पुरोहित, लेवी, द्वारपाल, गायक, कुछ सामान्य
प्रजाजन, मंदिर के सेवक, जो सभी इस्राएल वंशज ही थे,
अपने-अपने नगरों में रहने लगे. पूरा इस्राएल अपने-अपने
नगर में बस चुका था.

Ezra 3:1

1 इस समय सारा इस्राएल अपने-अपने ठहराए गए नगर में
बस चुका था. सातवें महीने वे सभी येरूशलेम इकट्ठे हो गए.

2 तब योज़ादक के पुत्र येशुआ तथा उसके भाइयों ने, जो
पुरोहित थे, शिअलतिएल के पुत्र ज़ेरुब्बाबेल तथा उसके
भाइयों ने मिलकर इस्राएल के परमेश्वर के लिए उस वेदी को
बनाया, जिस पर होमबलि चढ़ाई जानी थी, जैसा की परमेश्वर
के जन मोशेह की व्यवस्था में लिखा है.

3 उन्होंने उसी की नींव पर इस वेदी को बनाया, क्योंकि उन्हें
पास वाले देशों के लोगों का बहुत डर था. उन्होंने इस वेदी पर
याहवेह को होमबलि चढ़ाई-सुबह को होमबलि और शाम को
होमबलि.

4 उन्होंने झोंपड़ियों का उत्सव लिखी हुई विधि के अनुसार
मनाया तथा हर रोज़ उन्होंने ठहराई गई संख्या में होमबलियां
चढ़ाईं, जैसा की हर रोज़ के लिए इस संबंध में नियम था.

5 इसके बाद, होमबलि नित्य चढ़ाए जाने लगे; उसी प्रकार नए
चांद के उत्सवों में तथा याहवेह के लिए ठहराए गए पवित्र
उत्सवों में तथा हर एक के लिए याहवेह को स्वेच्छा बलि चढ़ाने
में भी. नए चांद के उत्सवों में, याहवेह के लिए ठहराए गए
उत्सवों में, जो पवित्र किए गए थे, तथा हर एक के लिए, जो
याहवेह को स्वेच्छा बलि चढ़ाना चाहता था, नित्यत आ गए.

6 सातवें महीने के पहले दिन से ही उन्होंने याहवेह के लिए
होमबलि चढ़ाना शुरू कर दिया था, किंतु याहवेह के भवन की
नींव नहीं रखी गई थी.

7 इसलिये उन्होंने राजमिस्त्रियों एवं कारीगरों को सिक्के,
सीदोनियों एवं सोरियों को खाने-पीने की वस्तुएं और तेल
दिया, कि वे फारस के राजा कोरेश की अनुमति के अनुसार
लबानोन के समुद्रतट पर स्थित योप्पा तक लकड़ी पहुंचा दें.

8 उनके येरूशलेम में परमेश्वर के भवन को पहुंचने के दूसरे
वर्ष के दूसरे महीने में शिअलतिएल के पुत्र ज़ेरुब्बाबेल तथा
योज़ादक के पुत्र येशुआ ने तथा उनके सारे पुरोहित भाइयों
तथा लेवियों ने तथा उन सभी ने, जो बंधुआई से येरूशलेम आ
चुके थे, काम शुरू कर दिया. उन्होंने याहवेह के भवन को
दोबारा बनाने के काम के लिए ऐसे लेवियों को चुना, जिनकी
आयु बीस वर्ष से अधिक थी.

9 इसके बाद येशुआ ने अपने पुत्रों तथा रिश्तेदारों के साथ
मिलकर कदमिएल तथा उसके पुत्र के साथ, यहूदाह के पुत्रों
के साथ तथा हेनादाद, उसके पुत्रों तथा रिश्तेदारों के साथ
मिलकर, जो लेवी थे, परमेश्वर के भवन के कारीगरों की
निगरानी की जवाबदारी ले ली.

10 जब राजमिस्त्रियों ने याहवेह के भवन की नींव डाल दी, तब
पुरोहित अपने कपड़ों में शोफ़ार नरसिंगे लेकर खड़े हो गए,
लेवी तथा आसफ के पुत्र झांझें लेकर इस्राएल के राजा दावीद
द्वारा बताई गई विधि के अनुसार याहवेह की स्तुति करने के
लिए तैयार हो गए.

11 जब याहवेह के भवन की नींव रखी गई तब उनकी स्तुति
का विषय था, "याहवेह भले हैं; तथा इस्राएल पर उनका अपार
प्रेम सदाकाल का है." उन्होंने अपने गीतों में स्तुति और आभार
प्रकट किए. उपस्थित सारे समुदाय ने उनके गीतों पर बहुत
ही ऊंचे शब्द में याहवेह का जय जयकार किया.

12 जबकि वे बूढ़े व्यक्ति, जिन्होंने पहले के भवन को देखा था,
अनेक पुरोहित, लेवी एवं मुख्य प्रधान, इस भवन की नींव के
रखे जाने पर उसे देखकर ऊंची आवाज में रो रहे थे जबकि
कुछ खुशी से जय जयकार कर रहे थे.

13 परिणामस्वरूप रोने की आवाज और खुशी की आवाज में
अंतर पहचानना असंभव हो गया; क्योंकि लोग बहुत ही ऊंची

आवाज में जय जयकार कर रहे थे. यह आवाज दूर तक सुनाई दे रही थी.

Ezra 4:1

1 जब यहूदिया तथा बिन्यामिन प्रदेश के शत्रुओं को यह मालूम चला, कि बंधुआई से लौट आए लोग इस्राएल के याहवेह परमेश्वर के लिए भवन बना रहे हैं,

2 तब उन्होंने ज़ेरुब्बाबेल तथा कुल के प्रधानों से जाकर विनती की, “हमें अनुमति दीजिए कि हम इस भवन बनाने के काम में आप लोगों के साथ जुट जाएं; क्योंकि आपके समान हम भी आपके ही परमेश्वर के आराधक हैं; हम अश्शूर के राजा एसारहद्दन के शासनकाल से इन्हीं परमेश्वर के लिए बलि चढ़ाते आ रहें हैं, जो हमें यहां लेकर आए हैं.”

3 किंतु ज़ेरुब्बाबेल, येशुआ तथा कुल के प्रधानों ने उन्हें उत्तर दिया, “तुममें तथा हममें हमारे परमेश्वर के लिए भवन बनाने के संबंध में कुछ भी संबंध नहीं है. इस्राएल के याहवेह के लिए हम ही मिलकर यह बनाएंगे, जैसा कि फारस के राजा कोरेश ने हमें आज्ञा दी है.”

4 यह देख उस देश के लोग यहूदाह के वंशजों को ड़राते हुए इस काम में रुकावट डालने लगे.

5 इस उद्देश्य से उन लोगों ने फारस देश के मंत्रियों को घूस दे दी, कि वे इस काम में रुकावट पैदा करें, यह सिर्फ फारस के शासक कोरेश के ही नहीं बल्कि फारस पर दारयावेश के शासन के समय तक करते रहे.

6 उन्होंने अहषवेरोष के शासनकाल की शुरुआत में ही यहूदिया एवं येरूशलेम निवासियों के विरुद्ध एक आरोप पत्र लिखकर दिया.

7 अर्तहषस्ता के शासनकाल में बिशलाम, मिथरेदाथ, तबील तथा उसके बाकी सहयोगियों ने मिलकर फारस के राजा अर्तहषस्ता को पत्र लिखा. इस पत्र को अरामी भाषा में लिखा गया था, किंतु इसका अनुवाद किया गया था.

8 तब शासनाधिकारी रहूम और सचिव शिमशाई ने येरूशलेम के लोगों के विरुद्ध पत्र लिखा. उन्होंने राजा अर्तहषस्ता को जो लिखा वह यह था:

9 शासनाधिकारी रहूम, सचिव शिमशाई, तथा तर्पली, अफ़ारसी, एरेकी, बाबेली और शूशनी के एलामी लोगों के न्यायाधीश और महत्वपूर्ण अधिकारियों की ओर से,

10 तथा वे अन्य लोग जिन्हें महान और शक्तिशाली ओस्नप्पर ने शमरिया के नगरों एवं परात नदी के पश्चिमी प्रदेश के अन्य स्थानों पर बसाय था.

11 (यह उस पत्र कि नकल है जिसे उन लोगों ने अर्तहषस्ता को भेजा था.) महाराज अर्तहषस्ता को महाराज के दास लोग जो परात नदी के पश्चिमी प्रदेश से हैं,

12 महाराज को यह मालूम हो, कि वे यहूदी, जो आपके द्वारा ही भेजे गए हैं, हमारे क्षेत्र येरूशलेम में आ चुके हैं. वे उस विद्रोही तथा घिनौने नगर को दोबारा बना रहे हैं. अब वे शहरपनाह को बनाकर नींव को मजबूत कर रहे हैं.

13 महाराज को यह मालूम हो, कि यदि उस नगर को दोबारा बना दिया जाएगा और इसकी शहरपनाह बन गई, तब ये लोग आपको न तो कोई भेंट चढ़ाएंगे, न चुंगी देंगे और न ही कोई कर, जिससे राजकीय खजाने की बहुत हानि हो जाएगी.

14 इसलिये कि हम राजमंदिर में काम करते हैं, हम महाराज को अपमानित होते हुए नहीं देख सकते, सो हम महाराज को इसकी ख़बर दे रहे हैं,

15 कि आप अपने पुरखों की पुस्तकों में खोज करवाएं, इन पुस्तकों के द्वारा आपको मालूम हो ही जाएगा कि यह नगर विद्रोही नगर ही रहा है, जिसने बाकी राजाओं की हानि ही की है. पुराने समय से ही यह नगर राजद्रोह फैलाता ही रहा है, जिसके परिणामस्वरूप आज यह नगर उजाड़ पड़ा हुआ है.

16 हम महाराज को यह बताने की कोशिश कर रहे हैं, कि यदि यह नगर दोबारा बन जाएगा, यदि इसकी शहरपनाह दोबारा बन जाएगी, तो नदी के उस पार के प्रदेश पर आप अपने भाग को खो देगें.

17 सो राजा ने सेनापति रहूम, शास्त्री शिमशाई तथा शमरिया में तथा नदी के पार के प्रदेश में चुने हुए उनके बाकी सहयोगियों को यह उत्तर भेजा: आप सभी का भला हो.

18 आप सभी के द्वारा भेजे गए पत्र का अनुवाद मेरे सामने पढ़ा गया.

19 मेरे द्वारा एक राज आज्ञा दी जा चुकी है तथा इस विषय में खोज भी की गई है; जिसके परिणामस्वरूप यह बात साफ़ हो चुकी है कि यह नगर पुराने समय से ही राजविद्रोह करता रहा है तथा इसके द्वारा दंगा और बलवा किया जाता रहा है.

20 प्रतापी राजाओं ने येरूशलेम पर शासन किया है तथा उनका शासन इस नदी के पार के सभी प्रदेशों पर रहा है तथा इन्हें भेंटें, चुंगी तथा कर दिए जाते रहे हैं.

21 तब अब यह आदेश ज़ारी कर दीजिए कि ये लोग इस कार्य को रोक दें तथा मेरे आदेश के बिना यह नगर दोबारा बसाने का काम न करें.

22 सावधान रहिए! इस आदेश के पालन में कोई भी ढिलाई न होने पाए. भला क्या लाभ होगा अगर राजाओं की हानि का खतरा बढ़ जाएगा?

23 जैसे ही राजा अर्तहषस्ता के पत्र का अनुवाद रहूम तथा शास्त्री शिमशाई तथा उनके सहयोगियों के सामने पढ़ा गया, उन्होंने बिना देर किए येरूशलेम जाकर अधिकार का इस्तेमाल करते हुए ज़बरदस्ती उन यहूदियों को आगे काम करने से रोक दिया.

24 इस प्रकार येरूशलेम में परमेश्वर के भवन का काम रुक गया-यह काम फारस के राजा दारयावेश के शासनकाल के दूसरे वर्ष तक रुका रहा.

Ezra 5:1

1 तब भविष्यद्वक्ता हाग्गय तथा इद्दो के पुत्र भविष्यद्वक्ता ज़करयाह ने उन यहूदियों के लिए, जो यहूदिया तथा येरूशलेम में रह रहे थे, इस्राएल के परमेश्वर के नाम में भविष्यवाणी की.

2 तब शअलतीएल के पुत्र ज़ेरुब्बाबेल तथा योज़ादक के पुत्र येशुआ ने येरूशलेम में परमेश्वर के भवन को बनाने का काम दोबारा शुरू कर दिया. उन्होंने परमेश्वर के इन भविष्यवक्ताओं का पूरा साथ था.

3 उसी समय उस नदी के पार के प्रदेश के राज्यपाल तत्तेनाई, शेथर-बोज़नाई तथा इनके सहयोगी आकर उनसे यह पूछने लगे:

4 "किसने तुम्हें इस भवन को दोबारा बनाने की आज्ञा दी है? परमेश्वर के भवन बनाने वालों के नाम क्या है?"

5 किंतु बात यह थी, कि उनके परमेश्वर की कृपादृष्टि यहूदियों के पुरनियों पर बनी थी और वे उन्हें तब तक न रोक सके जब तक यह समाचार दारयावेश तक न पहुंचा. तब इससे संबंधित उत्तर-पत्र लिखकर दिया गया.

6 उस नदी के पार के प्रदेश के राज्यपाल तत्तेनाई तथा शेथर-बोज़नाई तथा उसके सहयोगी अधिकारियों ने मिलकर राजा दारयावेश को एक पत्र भेजा.

7 पत्र में उन्होंने यह लिखकर भेजा: महाराज दारयावेश: आप सभी का भला हो.

8 महाराज को यह मालूम हो कि हमने यहूदिया प्रदेश के, महान परमेश्वर के भवन का निरीक्षण किया है, जिसको विशालकाय पत्थरों से बनाया जा रहा है. इसकी शहरपनाह को लकड़ी से मजबूत किया जा रहा है, सारा काम बहुत ही तेजी से किया जा रहा है, और उनका यह काम सफल भी होता जा रहा है.

9 यह देखकर हमने उन पुरनियों से प्रश्न किया, "किसके आदेश से आप यह भवन बना रहे हैं और इसका काम पूरा करते जा रहे हैं?"

10 आपको बताने के उद्देश्य से हमने उनके नाम भी पूछ लिए, इसलिये भी कि हम उनके अधिकारियों के नाम पत्र में लिख सकें.

11 उन्होंने हमें यह उत्तर दिया: "हम तो स्वर्ग तथा पृथ्वी के परमेश्वर के सेवक हैं और उस भवन को दोबारा बना रहे हैं, जिसको कई वर्षों पहले बनाया गया था, इस्राएल के एक प्रतापी राजा के द्वारा.

12 सिर्फ इसलिये कि हमारे पुरखों ने स्वर्ग के परमेश्वर के क्रोध
को भड़का दिया था, परमेश्वर ने उन्हें बाबेल के कसदी राजा
नबूकदनेज्ज़र के अधीन कर दिया, जिसने इस भवन को खत्म
कर दिया तथा देशवासियों को बाबेल में बंदी बना लिया था.

13 "फिर भी, बाबेल के राजा महाराज कोरेश ने अपने शासन
के पहले वर्ष में यह राज आज्ञा दे दी, कि परमेश्वर के भवन को
दोबारा बनाया जाए.

14 इसके अलावा परमेश्वर के भवन जो येरूशलेम में था
जिसके सोने और चांदी के बर्तन जिसे नबूकदनेज्ज़र द्वारा ले
जाए गए वे भी महाराज कोरेश के आदेश से बाबेल के भवन
से निकाल लिए गए तथा शेशबाज्ज़र नामक व्यक्ति को सौंप
दिए गए. इस व्यक्ति को राज्यपाल बनाया गया था.

15 महाराज ने ही उसे आदेश दिया था, 'इन बर्तनों को ले
जाकर येरूशलेम के भवन में जमा कर दो तथा परमेश्वर के
भवन को दोबारा अपने स्थान पर बनाया जाए.'

16 "तब इसी शेशबाज्ज़र ने येरूशलेम आकर परमेश्वर के
भवन की नींव रखी थी. उसी समय से अब तक यह बन रहा हैं
यह कार्य अब तक खत्म नहीं हुआ है."

17 अब यदि महाराज चाहें तो बाबेल में राजकीय खजाने में
खोज की जाए, कि येरूशलेम में परमेश्वर के भवन को दोबारा
बनाने की राज आज्ञा राजा कोरेश द्वारा दी गई थी या नहीं. तब
महाराज इस विषय पर अपना निर्णय हमें दे दें.

Ezra 6:1

1 तब राजा दारयावेश ने एक राजाज्ञा प्रसारित की और
अभिलेखागार में खोज की गई जहां बाबेल में मूल्यवान वस्तुएं
संग्रहीत की जाती थी.

2 मेदिया प्रदेश के एकबताना गढ़ में एक चर्मपत्र प्राप्त हो गया
जिसमें लिखी विषय-वस्तु इस प्रकार थी: स्मारक पत्र:

3 राजा कोरेश के शासन के प्रथम वर्ष में राजा कोरेश ने यह
राजाज्ञा प्रसारित की: येरूशलेम में परमेश्वर के भवन को, जहां
बलियां अर्पित की जाती हैं, पुनर्निर्मित किया जाए. इसकी
नींवों को पूर्ववत ही रखा जाए. इसकी ऊंचाई सत्ताईस मीटर
तथा चैड़ाई सत्ताईस मीटर होगी.

4 इसके लिए विशालकाय शिलाओं के तीन स्तर तथा एक स्तर
काठ का होगा इसके लिए आवश्यक धनराशि राजकीय कोष
से प्रदान की जाए.

5 इसके अतिरिक्त परमेश्वर के भवन के वे सभी स्वर्ण एवं रजत
पात्र जो नबूकदनेज्ज़र द्वारा येरूशलेम भवन से बाबेल लाए
गए थे येरूशलेम के इसी भवन में यथास्थान रख दिए जाएं,
तुम इन सभी को परमेश्वर के भवन में रख दोगे.

6 तब अब नदी के पार के प्रदेश के राज्यपाल तत्तेनाई, शेथर-
बोज़नाई तथा तुम्हारे सहकर्मी, नदी के पार के प्रदेशों के
अधिकारियों, इस स्थान से दूर रहो!

7 परमेश्वर के भवन के कार्य के साथ कोई छेड़-छाड़ न की
जाए. यहूदी राज्यपाल तथा यहूदियों के पुरनियों को परमेश्वर
के भवन के पुनर्निर्माण का कार्य उसके नियत स्थान पर करने
दिया जाए.

8 इसके अतिरिक्त मैं एक राजाज्ञा प्रसारित कर रहा हूं कि तुम्हें
परमेश्वर के भवन के पुनर्निर्माण में संलग्न यहूदियों के पुरनियों
से कैसा व्यवहार करना होगा: नदी के पार के प्रदेशों से प्राप्त
कर में से इन लोगों को राजकीय खजाने से बिना रुके या देर
किए धन प्रदान किया जाए.

9 उनकी गेहूं, नमक, दाखमधु और तेल की आवश्यकता चाहे
जितनी भी हो, स्वर्ग के परमेश्वर के लिए होमबलि अर्पण के
निमित्त बछड़े, मेढ़े, मेमने, गेहूं, लवण, द्राक्षारस तथा अभिषेक
का तेल जैसा कि येरूशलेम के पुरोहितों का आग्रह है, उन्हें
प्रतिदिन बिना चूक प्रदान किया जाता रहे.

10 कि वे स्वर्ग के परमेश्वर को बलिदान अर्पित करते हुए राजा
एवं उसके पुत्रों के जीवन के लिए प्रार्थना कर सकें.

11 मैं यह राजाज्ञा भी प्रसारित कर रहा हूं: यदि कोई व्यक्ति
इस राजाज्ञा का उल्लंघन करेगा, उसके घर से काठ की बल्ली
खींची जाएगी, उसे इस पर मृत्यु दंड दिया जाएगा, तथा इसके
कारण उसके आवास को कूड़े का ढेर बना दिया जाएगा.

12 वह परमेश्वर, जिन्होंने अपनी प्रतिष्ठा को वहां बनाकर रखा
है, ऐसे किसी भी राजा या प्रजा को गिरा दें, जो इस राजाज्ञा को
इसलिये टालने का प्रयास करता है कि येरूशलेम में परमेश्वर

Ezra 7:1

के इस आवास को नाश किया जा सके. मैं दारयावेश हूं, जिसने यह राजाज्ञा प्रसारित की है. इसका वस्तुतः पालन पूर्ण सावधानी से किया जाए!

13 उस नदी के पार के प्रदेश के राज्यपाल तत्तेनाई, शेथर-बोज़नाई तथा उनके सहकर्मियों ने पूर्ण सावधानी में इस आदेश का पालन किया, जैसा जैसा राजा दारयावेश का आदेश था.

14 यहूदियों के पुरनियों ने भविष्यद्वक्ता हाग्गय तथा इद्दो के पुत्र ज़करयाह की भविष्यवाणी के अनुरूप यह निर्माण पूरा करने में सफलता हासिल की. इस निर्माण का पूर्ण होना इस्राएल के परमेश्वर के आदेश तथा फारस के राजा कोरेश, दारयावेश तथा अर्तहषस्ता की राजाज्ञा के अनुसार हुआ.

15 भवन पुनर्निर्माण का यह कार्य अदर माह की तीसरी तिथि पर पूर्ण हुआ. यह राजा दारयावेश के शासन का छठा वर्ष था.

16 इस्राएल वंशज, पुरोहित, लेवी तथा शेष रहनेवालों ने बड़े ही आनंदपूर्वक परमेश्वर के भवन के अर्पण के उत्सव को मनाया.

17 परमेश्वर के इस भवन के अर्पण-उत्सव में उन्होंने 100 बछड़े, 200 मेढ़े, 400 मेमने अर्पित किए तथा इस्राएल के निमित्त पापबलि करके 12 बकरे इस्राएल के बारह गोत्रों के अनुसार अर्पित किए.

18 तब उन्होंने अपने-अपने विभागों के लिए पुरोहित तथा क्रम के अनुसार लेवी भी येरूशलेम में परमेश्वर की सेवा के लिए नियुक्त कर दिए—जैसा कि मोशेह लिखित विधान में निर्दिष्ट है.

19 वे जो रहनेवाले थे, उन्होंने प्रथम माह के चौदहवें दिन फ़सह उत्सव को मनाया.

20 क्योंकि पुरोहितों एवं लेवियों ने साथ ही अपने को पवित्र कर लिया था. वे सभी अब संस्कार के अनुसार शुद्ध किए गये थे. तब उन्होंने सभी रहनेवालों के लिए फ़सह मेमना वध किया सहपुरोहितों के लिए तथा स्वयं अपने लिए.

21 इस्राएल वंशज, जो निर्वासन से लौट आए थे तथा वे सभी, जिन्होंने स्वयं को उस देश की अशुद्धताओं से अलग कर लिया था, उनके साथ हो गए थे, कि वे याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर की खोज करें; इन्होंने फ़सह के भोज का सेवन किया.

22 तब उन्होंने बड़े ही आनंदपूर्वक सात दिन खमीर रहित रोटी का उत्सव भी मनाया, याहवेह ने उन्हें आनंदित किया था. याहवेह ने ही अश्शूर के राजा का हृदय उनकी ओर फेर दिया था कि वह उन्हें, इस्राएल के परमेश्वर के भवन के कार्य के लिए सहायता करें.

Ezra 7:1

1 इन घटनाओं के बाद फारस के राजा अर्तहषस्ता के शासनकाल में एज्रा बाबेल से लौट आए. एज्रा सेराइयाह के पुत्र थे, सेराइयाह अज़रियाह का, अज़रियाह हिलकियाह का, हिलकियाह शल्लूम का,

2 शल्लूम सादोक का, सादोक अहीतूब का, अहीतूब अमरियाह का,

3 अमरियाह अज़रियाह का, अज़रियाह मेराइओथ का,

4 मेराइओथ ज़ेराइयाह का, ज़ेराइयाह उज्जी का, उज्जी बुक्की का,

5 बुक्की अबीशुआ का, अबीशुआ फिनिहास का, फिनिहास एलिएज़र का, एलिएज़र प्रमुख पुरोहित अहरोन का पुत्र था.

6 एज्रा बाबेल से लौट आए. वह मोशेह को याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर के द्वारा सौंपी गई व्यवस्था के विशेषज्ञ थे. याहवेह, उनके परमेश्वर का आशीर्वाद एज्रा पर बना हुआ था, तब राजा ने उन्हें वह सब दिया, जिस जिस वस्तु का उन्होंने मांगा था.

7 कुछ इस्राएली, कुछ पुरोहित, लेवी, गायक, द्वारपाल तथा भवन के कर्मचारी राजा अर्तहषस्ता के शासनकाल के सातवें वर्ष में येरूशलेम पहुंचे.

8 स्वयं एज्रा राजा के शासनकाल के सातवें वर्ष के पांचवें महीने में येरूशलेम पहुंचे.

9 उन्होंने बाबेल से अपनी यात्रा पहले महीने के पहले दिन से
शुरू की थी तथा वह पांचवें महीने के पहले दिन येरूशलेम
पहुंच गए थे, क्योंकि उनके परमेश्वर की कृपादृष्टि उन पर बनी
हुई थी.

10 एज्रा ने स्वयं को याहवेह की व्यवस्था के अध्ययन, स्वयं
उसका पालन करने तथा इस्राएल राष्ट्र में याहवेह की विधियों
और नियमों की शिक्षा देने के लिए समर्पित कर दिया था.

11 पुरोहित, विधि-विशेषज्ञ, याहवेह द्वारा इस्राएल के लिए
ठहराए गए उन आदेशों और विधियों में प्रशिक्षित एज्रा को
राजा अर्तहषस्ता ने जो राजा कि आज्ञा सौंपी थी उसकी नकल
यह है:

12 अर्तहषस्ता, राजा की, ओर से एज्रा को, जो पुरोहित और
स्वर्ग के परमेश्वर की व्यवस्था के गुरु हैं, नमस्कार.

13 मैंने इसी समय एक राजा की आज्ञा दी है, कि मेरे राज्य में
इस्राएल देश का कोई भी नागरिक, उनके पुरोहित और लेवी
यदि चाहें तो आपके साथ येरूशलेम जाने के लिए स्वतंत्र हैं.

14 क्योंकि आप राजा द्वारा आपके ही परमेश्वर की व्यवस्था के
अनुसार, जो आपके ही पास है, यहूदिया प्रदेश तथा
येरूशलेम के विषय में पूछताछ करने के उद्देश्य से राजा के
सात मंत्रियों के साथ वहां भेजे जा रहे हैं,

15 कि आप अपने साथ राजा और उनके मंत्रियों द्वारा इस्राएल
के परमेश्वर को, जिनका निवास येरूशलेम में है, भेंट में
चढ़ाया जानेवाला सोना और चांदी भी ले जाएं.

16 आप वह सारा सोना और चांदी, जो आपको पूरे बाबेल राज्य
में से मिलेगा और वे भेंटें, जो इस्राएली और उनके पुरोहित
येरूशलेम में उनके परमेश्वर के भवन के और उनके पुरोहित
येरूशलेम में उनके परमेश्वर के भवन के निमित्त देंगे, अपने
साथ ले जाएंगे.

17 तब इस धनराशि से आप बड़ी ही सावधानीपूर्वक बछड़े,
मेढ़े तथा मेमने खरीदेंगे और उनकी अन्नबलियों तथा पेय
बलियों को येरूशलेम में अपने परमेश्वर के भवन की वेदी पर
चढ़ाएंगे.

18 बचे हुए चांदी और सोने का उपयोग कैसे किया जाए, यह
आप अपने परमेश्वर की इच्छा के अनुसार और अपने भाइयों
की सहमति के अनुसार कर सकते हैं.

19 इसके अलावा वे बर्तन, जो आपको आपके परमेश्वर के
भवन में इस्तेमाल के लिए सौंपे गए हैं, आप उन सभी बर्तनों
को येरूशलेम के परमेश्वर को सौंप देंगे.

20 तब आपके परमेश्वर के भवन के लिए, जो बाकी ज़रूरतें हैं,
जिनको पूरा करना आपकी जवाबदारी है, उसको आप
राजकीय खजाने से पूरा कर सकते हैं.

21 "मैं, हां मैं, राजा अर्तहषस्ता, सभी कोषाध्यक्षों के लिए, जो
नदी के पार के प्रदेश के लिए चुने गए हैं, यह राज आज्ञा दे रहा
हूं: स्वर्ग के परमेश्वर की व्यवस्था के विशेषज्ञ, पुरोहित एज्रा की
चाहे कोई भी ज़रूरत हो, उसको सावधानी के साथ पूरा किया
जाए

22 यहां तक, यदि वह एक सौ तालन्त चांदी, एक सौ कोर गेहूं,
एक सौ बाथ दाखरस, एक सौ बाथ तेल, तथा नमक
आवश्यकतानुसार.

23 स्वर्ग के परमेश्वर द्वारा, जो कुछ भी आदेश दिया गया है, वह
सब स्वर्ग के भवन के लिए बड़े उत्साह के साथ पूरा किया
जाए, कि किसी भी रूप से राजा और उसके पुत्रों के साम्राज्य
के विरोध में परमेश्वर का क्रोध न भड़कने पाए.

24 हम आपको यह भी बताना चाहते हैं, कि आप लोगों को
पुरोहितों, लेवियों, गायकों, द्वारपालों, भवन के कर्मचारियों
तथा परमेश्वर के इस भवन के दासों से न तो कर लेने की, न
भेंटे ग्रहण करने की और न चुंगी लेने की अनुमति है.

25 "एज्रा, आप, परमेश्वर के द्वारा मिली हुई अपनी बुद्धि के
अनुसार न्यायी और दण्डाधिकारी चुन लीजिए, कि वे नदी के
पार के प्रदेश में प्रजा के विवादों का न्याय करें-उनका भी, जो
आपके परमेश्वर की व्यवस्था को जानते हैं. वे, जो व्यवस्था और
विधियों को नहीं जानते हैं, आप उन्हें इनकी शिक्षा दे सकते हैं.

26 जो कोई आपके परमेश्वर की व्यवस्था और राजा के नियमों
को न माने, उसे कठोरता पूर्वक दंड दिया जाए, चाहे यह मृत्यु
दंड हो, देश निकाला हो, संपत्ति ज़ब्त करना हो या कैद."

27 स्तुति के योग्य हैं याहवेह, हमारे पुरखों के परमेश्वर, जिन्होंने
महाराज के हृदय में इस विषय का विचार दिया, कि
येरूशलेम में याहवेह का भवन संवारा जाए,

28 धन्य हैं याहवेह, जिन्होंने मुझे महाराज तथा उनके मंत्रियों
तथा उनके बड़े-बड़े हाकिमों की दृष्टि में अपनी कृपा से भर
दिया है. इसलिये याहवेह, मेरे परमेश्वर की कृपादृष्टि मुझ पर
होने के कारण मुझे बल मिल गया. तब मैंने इस्राएलियों में से
ऐसे व्यक्ति चुन लिए, जो मेरे साथ हाथ बंटाने के लिए
येरूशलेम लौट सकें.

Ezra 8:1

1 सम्राट अर्तहषस्ता के शासनकाल में बाबेल से जो लोग मेरे
साथ लौटे थे, उनके पितरों के प्रधान और उनकी वंशावली इस
प्रकार:

2 फिनिहास वंशज; गेरशोम; इथामार-वंशज; दानिएल दावीद
के वंशज; हत्तुष

3 शेकानियाह के वंशज: शेकानियाह, जो पारोश, ज़करयाह
में से था तथा उसके साथ 150 पुरुष, जो वंशावली में शामिल
थे;

4 पाहाथ-मोआब के वंशज, ज़ेराइयाह के पुत्र, एलीहोएनाई
तथा उसके साथ 200 पुरुष;

5 ज़त्टूके वंशज; याहाज़िएल के पुत्र शेकानियाह के वंशज
तथा उसके 300 पुरुष;

6 योनातन के पुत्र आदिन, एबेद तथा उसके साथ 50 पुरुष;

7 एलाम वंशज; अथालियाह के वंशज येशाइयाह के वंशज
तथा उसके साथ 70 पुरुष;

8 शेपाथियाह वंशज; मिखाएल का बेटा ज़ेबादिया, जिसके
साथ 80 लोग थे.

9 योआब वंशज; येहिएल का बेटा ओबदिया, जिसके साथ
218 लोग थे.

10 शेलोमीथ वंशज; योसिब्याह का बेटा जिसके साथ 160
लोग थे.

11 बेबाइ वंशज; बेबाइ का बेटा ज़करयाह, जिसके साथ 28
लोग थे

12 अजगाद वंशज; हक्कातान का बेटा योहानन, जिसके साथ
110 लोग थे.

13 अदोनिकम वंशज; जो लोग उसके साथ गए थे उनके नाम
ये है एलिफेलेत, येइएल, और शेमायाह, और उनके साथ 60
लोग थे.

14 बिगवाई वंशज; उथाई और ज़क्कूर थे और उनके साथ 70
लोग थे.

15 इसके बाद मैंने इन्हें अहावा की दिशा में बहने वाली नदी
के तट पर इकट्ठा किया. हमने वहां तीन दिनों के लिए डेरे डाल
दिए. जब मैंने इन लोगों का निरीक्षण किया तो मुझे यह मालूम
हुआ, कि इन लोगों में एक भी लेवी न था.

16 सो मैंने एलिएज़र, अरीएल, शेमायाह, एल-नाथान, यारिब,
एलनाथन, नाथान, ज़करयाह तथा मेशुल्लाम को, जो प्रधान थे
तथा योइआरिब तथा एलनाथन, जो शिक्षक थे, बुलवा लिया.

17 इन सभी को मैंने कासिफिया नामक स्थान के अधिकारी के
पास भेज दिया. मैंने उन्हें विशेष निर्देश दिए कि उन्हें इद्दो तथा
उसके संबंधियों के सामने क्या कहना होगा, ये सभी
कासिफिया में भवन के कर्मचारी थे तथा इनसे यह उम्मीद थी
कि ये परमेश्वर के भवन के लिए हमें सेवक देंगे.

18 हमारे परमेश्वर की कृपादृष्टि होने के कारण उन्होंने हमारे
सामने इस्राएल के पुत्र लेवी के वंशज माहली के पुत्रों में से एक
ऐसा व्यक्ति दिया, जो सक्षम व्यक्ति था, अर्थात् शेरेबियाह तथा
उसके पुत्रों और रिश्तेदारों में से एक-ये अठारह व्यक्ति थे;

19 और हशाबियाह को और उसके संग मेरारी के वंश में से
येशाइयाह को और उसके पुत्रों और भाइयों को अर्थात् बीस
जनों को;

20 और नतीन लोगों में से जिन्हें दावीद और हाकिमों ने लेवियों
की सेवा करने को ठहराया था, दो सौ बीस नतिनों को ले आए.
इन सभी के नाम लिखे हुए थे.

21 इसके बाद मैंने अहावा नदी के तट पर उपवास की घोषणा
की, कि हम स्वयं को अपने परमेश्वर के सामने नम्र बनाएं और
उनसे अपने लिए इस यात्रा में, अपनी, अपने बालकों तथा
वस्तुओं की सुरक्षा की प्रार्थना करें.

22 मार्ग में शत्रुओं से सुरक्षा के उद्देश्य से महाराज से सैनिकों
और घुड़सवारों की याचना करने में मुझे संकोच हो रहा था,
क्योंकि हम महाराज से यह कह चुके थे "हमारे परमेश्वर की
कृपादृष्टि उन सभी पर बनी रहती है, जो उनकी खोज में लगे
रहते हैं, उनका सामर्थ्य और उनका क्रोध उन सबके विरुद्ध
हो जाता है, जो उनको त्याग देते हैं."

23 सो हमने उपवास किया तथा इस विषय में परमेश्वर की
इच्छा जानने की कोशिश की और उन्होंने हमारी सुन ली.

24 इसके बाद मैंने बारह मुख्य पुरोहितों को इस काम के लिए
चुना: शेरेबियाह, हशाबियाह तथा उनके साथ दस दूसरे
पुरोहित,

25 मैंने चांदी, सोने और उन सभी बर्तनों को तौला तथा राजा,
उनके मंत्रियों, उनके शासकों तथा वहां उपस्थित सारी
इस्राएल द्वारा प्रस्तुत भेंटों को उन्हें सौंप दिया.

26 इस प्रक्रिया में मैंने माप कर 650 तालन्त चांदी और बर्तन,
जिनका मान 100 तालन्त था तथा सोने के 100 तालन्त

27 तथा 20 सोने के कटोरे, जिनका मूल्य था 1,000 दारिक
तथा दो बर्तन कीमती चमकीले कांसे के सोने के समान
कीमती.

28 इसके बाद मैंने उन्हें यह याद दिलाते हुए चेताया, "आप
लोग याहवेह के लिए पवित्र, अलग किए हुए लोग हैं, वैसे ही ये
बर्तन भी पवित्र हैं तथा चांदी, सोने और स्वेच्छा भेंटे भी, जो
याहवेह, आपके पूर्वजों के परमेश्वर को चढ़ाई गई हैं.

29 इनकी रखवाली करते हुए इन्हें सुरक्षित रखिए तथा
येरूशलेम पहुंचकर इन्हें प्रधान पुरोहितों, लेवियों तथा
इस्राएल के गोत्रों के प्रधानों को याहवेह के भवन के कमरों में
ले जाकर सौंप देना."

30 सो पुरोहितों तथा लेवियों ने वे तौले हुए चांदी, सोने और
बर्तनों को येरूशलेम में हमारे परमेश्वर के भवन तक ले जाना
स्वीकार कर लिया.

31 इसके बाद हमने पहले महीने की बारहवीं तारीख को
अहावा नदी के तट के पड़ाव से येरूशलेम के लिए कूच किया.
हम पर परमेश्वर की कृपादृष्टि बनी हुई थी, तब उन्होंने शत्रुओं
एवं मार्ग में घात लगाए हुए डाकुओं से हमारी रक्षा की.

32 हम येरूशलेम पहुंच गए तथा वहां तीन दिन ठहरे रहे.

33 चौथे दिन चांदी, सोने और बर्तन भवन में जाकर पुरोहित
उरियाह के पुत्र मेरेमोथ को तौलकर सौंप दिए गए. इसका
गवाह था, फिनिहास का पुत्र एलिएज़र तथा इन दोनों के
अलावा वहां लेवी येशुआ का पुत्र योज़ाबाद तथा बिन्नूइ का
पुत्र नोआदिया भी उपस्थित थे.

34 हर एक वस्तु गिनी और तौली हुई थी तथा उनका तौल उसी
समय वहां लिख लिया गया था.

35 बंधुआई से लौट आए पहले के बंदियों ने इस्राएल के
परमेश्वर को होमबलि चढ़ाई: पूरे इस्राएल के लिए 12 बछड़े,
96 मेढ़े, 77 मेमने, पापबलि के लिए 12 बकरे, ये सभी याहवेह
के लिए होमबलि के लिए चढ़ाए गए.

36 इसके बाद उन्होंने नदी के पार के प्रदेशों में राज्यपालों और
प्रशासकों को राजा कि आज्ञा सौंप दी और उनकी ओर से
परमेश्वर के भवन से संबंधित सहायता प्राप्त होने लगी.

Ezra 9:1

1 जब यह सब पूरा हो चुका, प्रशासकों ने आकर मुझसे कहा,
"इस्राएलियों ने, पुरोहितों ने तथा लेवियों ने स्वयं को इस देश
के मूल निवासियों, कनानियों, हित्तियों, परिज़्ज़ियों, यबूसियों,
अम्मोनियों, अमोरी तथा मोआबियों की घृणित जीवनशैली से
अलग नहीं रखा है.

2 क्योंकि उन्होंने उनकी कुछ कन्याओं से विवाह कर लिया है
तथा कुछ का विवाह अपने पुत्रों से कर दिया है;
परिणामस्वरूप यह पवित्र, अलग किया हुआ राष्ट्र इन राष्ट्रों में
मिल चुका है. सच तो यह है कि शासक और अधिकारी इस
विश्वासघात में सबसे आगे रहे हैं."

3 यह सुनकर मैंने अपना वस्त्र और बागा फाड़ दिया तथा सिर
के कुछ बाल तथा दाढ़ी के कुछ बाल भी नोच दिए और निराश
होकर बैठ गया.

4 उस समय वे सभी, जो इन बंधुआई से आए लोगों के इस
विश्वासघात के कारण भयभीत हो गए थे, मेरे पास इकट्ठे हो
गए. मैं शाम तक निराश बैठा रहा.

5 जब सांझ की बलि का समय हो गया, मैं अपने विलाप की
दशा से उठा. मेरे वे वस्त्र फटे हुए ही थे; मैंने घुटनों पर आ
याहवेह, अपने परमेश्वर की ओर हाथ बढ़ा दिए

6 और यह दोहाई दी: "मेरे परमेश्वर, मैं इतना लज्जित और
परेशान हूं, कि मैं आपकी ओर आंख तक नहीं उठा सकता,
मेरे परमेश्वर, हमारा अधर्म तो हमारे सिरों से भी ऊपर उठ
चुका है तथा हमारे दोष तो आकाश तक पहुंच चुके हैं.

7 हमारे पूर्वजों के समय से लेकर आज तक हम घोर दोष में
डूबे हुए हैं, हमारे अधर्म के कारण हमें, हमारे राजाओं को तथा
हमारे पुरोहितों को अन्य राष्ट्रों की तलवार, बंधुआई, लूट तथा
लज्जा का सामना करना पड़ा है तथा यह स्थिति आज भी वही
है.

8 "किंतु अब, याहवेह हमारे परमेश्वर ने कुछ समय के लिए हम
पर कृपादृष्टि की है. आपने हमारे लिए एक भाग छोड़ रखा है,
कि हमें आपके पवित्र स्थान में जगह मिल सके, कि परमेश्वर
हमारी आंखों में नई रोशनी देकर हमारी बंधुआई में हमें कुछ
शांति दें.

9 क्योंकि सच यह है कि हम तो सिर्फ दास ही हैं; फिर भी
परमेश्वर ने हमें छोड़ नहीं दिया, बल्कि हमें फारस के राजाओं
की नज़रों में दया प्रदान की है, कि हम ताज़गी पाकर अपने
परमेश्वर के भवन को दोबारा बना सकें, कि हम खंडहरों को
सुधारते हुए यहूदिया एवं येरूशलेम के लिए शहरपनाह खड़ी
कर सकें.

10 "अब, हमारे परमेश्वर, इसके बाद हमारे सामने कहने के
लिए कुछ भी बचा नहीं है. हमने तो आपकी आज्ञाएं तोड़ दी
हैं,

11 जो हमें आपने अपने सेवकों, उन भविष्यवक्ताओं के द्वारा
इन शब्दों में दी थी 'तुम लोग जिस देश पर अधिकार करने के
लक्ष्य से उसमें प्रवेश कर रहे हो, एक अशुद्ध देश है, जिसे उन
राष्ट्रों के लोगों ने अशुद्ध कर दिया है, उनके घिनौने कामों ने
इस देश को एक छोर से दूसरे छोर तक अपनी ही
अशुद्धताओं से भर दिया है.

12 इसलिये अब न तो अपनी पुत्रियां उनके पुत्रों की पत्नियां होने
के लिए दोगे और न ही उनकी पुत्रियां अपने पुत्रों की पत्नियां
होने के लिए लोगे. कभी भी उनकी शांति की दिशा में कोई
कोशिश न करना और न उनके बलवंत होने के लिए कोई
सहायता ही देना. इससे तुम बलवान होते जाओगे तथा भूमि
की सबसे अच्छी उपज को खाते हुए, अपनी संतानों के लिए
सदा की मीरास छोड़ सकोगे.'

13 "जबकि सच यही है कि हम पर यह स्थिति सिर्फ हमारे ही
बुरे कामों और घोर अपराधों के कारण आई है. इतना होने पर
भी परमेश्वर, आपने हमारे अधर्म के प्रति सही दंड देने में
धीरज बनाए रखा और हमें यह भाग सौंप दिया है.

14 क्या हमारा दोबारा आपके आदेशों को त्याग कर घृणित
जीवन बिताने वाले लोगों के साथ वैवाहिक संबंध रखना सही
होगा? क्या आपका हम पर क्रोधित होना, हां, यहां तक
क्रोधित हो जाना, जिससे आपके द्वारा हमें नाश कर देने में
कुछ बाकी न रह जाए और न ही कोई रह जाए.

15 याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर, आप तो धर्मी हैं. हम तो सिर्फ
आज यहां बच निकले भाग ही है. हम स्वीकार करते हैं हम
आपके सामने दोषियों के रूप में उपस्थित हैं, जबकि इस
स्थिति में तो कोई भी आपके सामने ठहर नहीं सकता."

Ezra 10:1

1 जब एज्रा परमेश्वर के भवन के सामने भूमि पर दंडवत कर
प्रार्थना करते हुए पाप स्वीकार करते हुए रो रहे थे, इस्राएल के
पुरुषों, स्त्रियों एवं बालकों की एक बहुत बड़ी भीड़ उनके पास
इकट्ठी हो चुकी थी. वे सभी फूट-फूटकर रो रहे थे.

2 एलाम कुल के येहिएल के पुत्र शेकानियाह ने एज्रा से कहा,
“हम अपने परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य नहीं रहे हैं और हमने
इस देश के लोगों में से विदेशी स्त्रियों से विवाह कर लिया है.
यह सब होने पर भी इस्राएल के लिए अब एक ही आशा बची
है.

3 इसलिये अब आइए हम अपने परमेश्वर से वाचा बांधें तथा
अपनी सभी पत्नियों तथा उनसे पैदा बालकों को छोड़ दें-जैसा
कि मेरे प्रधान तथा उनका जिन्हें परमेश्वर के इस आदेश के
प्रति पूर्ण विश्वास है, उनकी सलाह है. यह सब व्यवस्था के
अनुसार ही पूरा किया जाए.

4 आप तैयार हो जाइए! क्योंकि यह अब आपकी ही
जवाबदारी है. हम आपके साथ हैं. आप साहस के साथ इसको
कीजिए.”

5 यह सुन एज्रा उठे तथा सभी अगुए पुरोहितों, लेवियों तथा सारे
इस्राएल को यह शपथ लेने के लिए प्रेरित किया कि वे इस
प्रस्ताव के अनुसार ही करेंगे. इसलिये उन्होंने यह शपथ ली.

6 तब एज्रा परमेश्वर के भवन के सामने से उठे और एलियाशिब
के पुत्र येहोहानन के कमरे में चले गए. वह उस कमरे में चले
ज़रूर गए मगर उन्होंने वहां न कुछ खाया और न कुछ पिया;
क्योंकि वह निकाले गए लोगों द्वारा किए गए इस विश्वासघात
के लिए दुःखी थे.

7 उन सभी ने सारे यहूदिया तथा येरूशलेम में निकालकर
लाए लोगों के लिए यह घोषणा की, कि उन्हें येरूशलेम में
इकट्ठा होना है,

8 तथा जो कोई प्रधानों और प्राचीनों की सलाह के अनुसार
तीन दिनों के भीतर वहां उपस्थित न होगा, उसकी सारी
संपत्ति ज़ब्त कर ली जाएगी तथा स्वयं उसे बंधुआई से निकल
आए लोगों की सभा से निकाल दिया जाएगा.

9 तब यहूदिया तथा बिन्यामिन के सारे पुरुष तीन दिनों के
अंदर येरूशलेम में इकट्ठा होने को गए. यह अवसर था नवें
महीने की बीसवीं तारीख का. सभी इस अवसर पर परमेश्वर
के भवन के सामने खुले आंगन में बैठे हुए थे. इस विषय के
कारण वे भयभीत थे तथा मूसलाधार बारिश भी हो रही थी,
तब उन पर कंपकंपी छाई हुई थी.

10 पुरोहित एज्रा खड़े हो गए तथा उन्हें संबोधित करने लगे,
“आप लोगों ने विश्वासघात किया और विदेशी स्त्रियों से विवाह
करने के द्वारा आपने इस्राएल पर दोष बढ़ा दिया है.

11 तब यही मौका है कि आप लोग याहवेह अपने पूर्वजों के
परमेश्वर के सामने अपने पाप स्वीकार करें, तथा उनकी संतुष्टि
के लिए उपयुक्त कदम उठाएं. स्वयं को इस देश के मूल
निवासियों से तथा विदेशी स्त्रियों से अलग कर लीजिए.”

12 ऊंची आवाज में उपस्थित भीड़ ने घोषणा की, “जो आज्ञा!
जो कुछ आपने कहा है हम वही करेंगे.

13 किंतु हम लोगों की संख्या बड़ी है, फिर यह बरसात ऋतु है,
तब हम खुले में खड़े न रह सकेंगे. इसके अलावा यह काम
ऐसा नहीं, जो एक अथवा दो दिनों में पूरा हो जाए, क्योंकि
हमारे पाप बहुत ही भयंकर हो चुके है.

14 हमारे प्रधान सारी सभा की अगुवाई करें तथा वे सभी
नगरवासी जिनकी विदेशी पत्नियां हैं, निर्धारित अवसर पर हर
एक नगर के प्राचीनों एवं न्यायाध्यक्षों के साथ यहां आ जाएं,
कि इस विषय के कारण हमारे परमेश्वर का यह भड़का हुआ
क्रोध हम पर से शांत हो जाए.”

15 इस प्रस्ताव का विरोध सिर्फ दो व्यक्तियों ने किया:
आसाहेल के पुत्र योनातन तथा तिकवाह के पुत्र याहाज़िएल.
लेवी शब्बेथाइ ने इन दोनों का समर्थन किया.

16 उन सभी बंधुआई से आए लोगों ने एज्रा द्वारा सुझाई गई
योजना का समर्थन किया. पुरोहित एज्रा ने नामों का उल्लेख
करते हुए पितरों के प्रधानों को चुना. ये सभी दसवें महीने के
पहले दिन इस विषय से संबंधित सच्चाईयों का परीक्षण करने
इकट्ठा हो गए.

17 विदेशी स्त्रियों से विवाहित सभी पुरुषों का परीक्षण पहले
महीने की पहली तारीख पर पूरा हो गया.

18 पुरोहितों के उन पुत्रों में से वे, जिन्होंने विदेशी स्त्रियों से
विवाह कर लिया था: ये थे योज़ादक का पुत्र येशुआ तथा
उसके भाई: मआसेइयाह, एलिएज़र, यारिब तथा गेदालियाह.

19 उन्होंने शपथ ली कि वे अपनी पत्नियों को छोड़ देंगे. तब
इसलिये कि वे दोषी थे, उन्होंने भेड़-बकरियों में से इस दोष से
छूटने के लिए एक मेढ़े की बलि चढ़ाई.

20 इम्मर के पुत्रों में से थे: हनानी तथा ज़ेबादिया.

21 हारिम के पुत्रों में से थे: मआसेइयाह, एलियाह, शेमायाह,
येहिएल तथा उज्जियाह.

22 पशहूर के पुत्रों में से: एलिओएनाइ, मआसेइयाह,
इशमाएल, नेथानेल, योज़ाबाद तथा एलासाह.

23 लेवियों में से थे: योज़ाबाद, शिमेई, केलाइयाह (अर्थात्,
केलिता), पेथाइयाह, यहूदाह तथा एलिएज़र.

24 गायकवृन्दों में से था: एलियाशिब; द्वारपालों में शल्लूम,
तेलेम तथा उरी.

25 इस्राएल में पारोश के पुत्रों में से थे: रामियाह, इज्ज़ियाह,
मालखियाह, मियामिन, एलिएज़र, मालखियाह तथा
बेनाइयाह.

26 एलाम के वंशजों में से थे: मत्तनियाह, ज़करयाह, येहिएल,
अबदी, येरेमोथ तथा एलियाह.

27 ज़त्तू के पुत्रों में से थे: एलिओएनाइ, एलियाशिब, मत्तनियाह,
येरेमोथ, ज़ाबाद तथा आजिजा.

28 बेबाइ के पुत्रों में से थे: येहोहानन, हननियाह, ज़ब्बाई तथा
अथलाइ.

29 बानी के पुत्रों में से थे: मेशुल्लाम, मल्लूख तथा अदाइयाह
याशूब, शेअल तथा येरेमोथ.

30 पाहाथ-मोआब के पुत्रों में से थे: आदना, चेलल, बेनाइयाह
मआसेइयाह, मत्तनियाह, बसलेल, बिन्नूइ तथा मनश्शेह.

31 हारिम के पुत्रों में से थे: एलिएज़र, इश्शियाह, मालखियाह,
शेमायाह, शिमओन,

32 बिन्यामिन, मल्लूख तथा शेमारियाह.

33 हाषूम के पुत्रों में से थे: मत्तेनाइ, मत्ताित्ताह ज़ाबाद,
एलिफेलेत, येरेमाई, मनश्शेह तथा शिमेई.

34 बानी के पुत्रों में से थे: मआघई, अमराम, उएल,

35 बेनाइयाह, बेदेइयाह, चेलुही,

36 वानियाह, मेरेमोथ, एलियाशिब,

37 मत्तनियाह, मत्तेनाइ, यआसु

38 बानी, बिन्नूइ के पुत्रों में से थे: शिमेई,

39 शेलेमियाह, नाथान अदाइयाह,

40 माखनादेबाइ, शाशाई, शाराई,

41 अज़ारेल, शेलेमियाह, शेमारियाह

42 शल्लूम, अमरियाह तथा योसेफ़.

43 नेबो के पुत्रों में से थे: येइएल, मत्तीथियाह, ज़ाबाद, ज़ेबिना,
यद्दाइ, योएल तथा बेनाइयाह.

44 इन सभी ने विदेशी स्त्रियों से विवाह किया था तथा इनमें से
कुछ के इन स्त्रियों से संतान भी पैदा हुई थी.